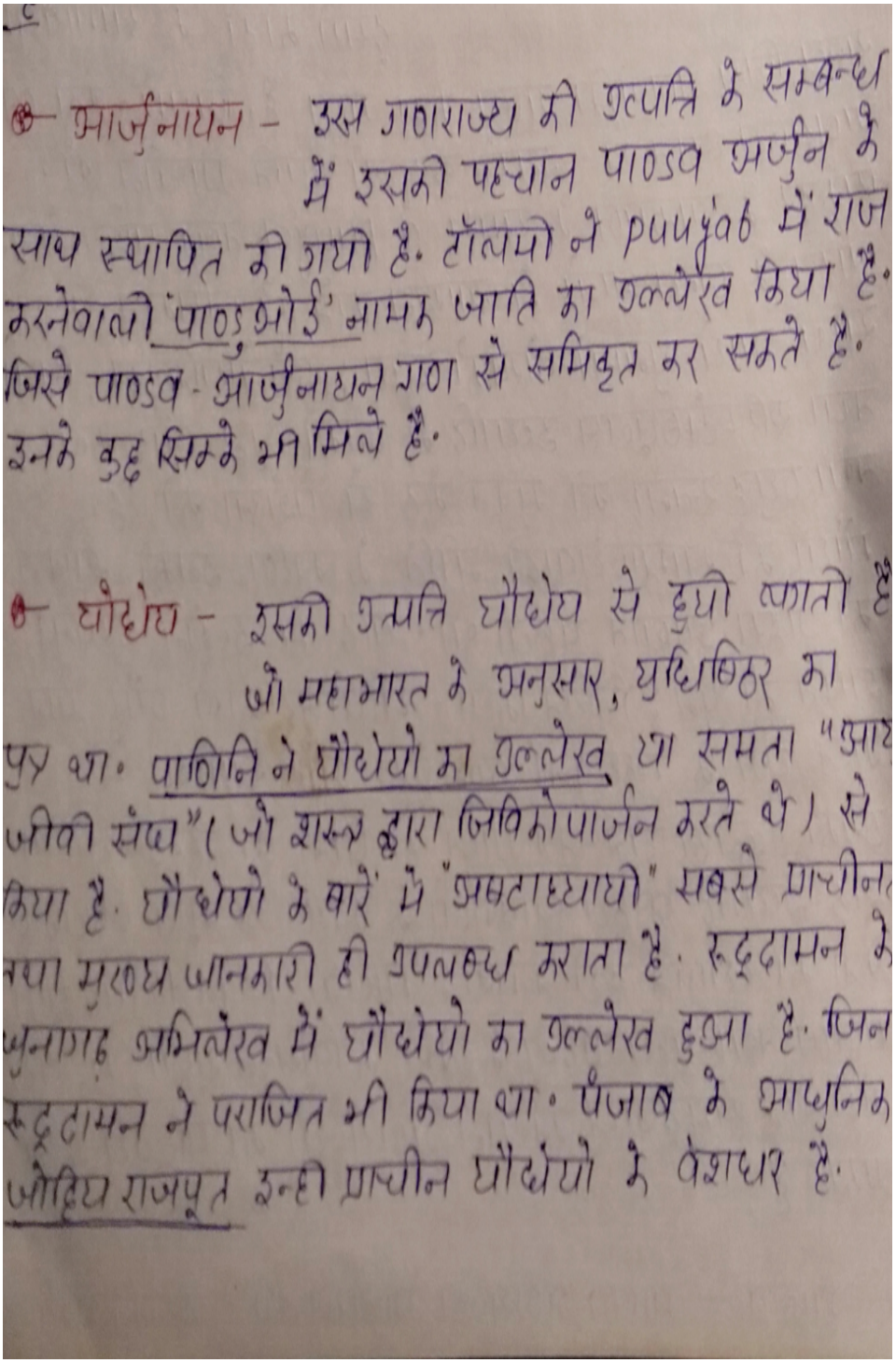

- आर्जुनायन - इस गणराज्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में इसकी पहचान पाण्डव अर्जुन के साथ स्थापित की गयी है. टॉलमी ने Punjab में राज करनेवाली 'पाण्डुओई' नामक जाति का उल्लेख किया है. जिसे पाण्डव - आर्जुनायन गण से समिकृत कर सकते है. इनके कुछ सिक्के भी मिले है.

- यौधेय - इसकी उत्पत्ति यौधेय से हुयी बताते है जो महाभारत के अनुसार, युधिष्ठिर का पुत्र था. पाणिनि ने यौधेयो का उल्लेख या समता "आयु जीवी संघ" (जो शस्त्र द्वारा जिविकोपार्जन करते थे) से किया है. यौधेयो के बारें में "अष्टाध्यायी" सबसे प्राचीन तथा मुख्य जानकारी ही उपलब्ध कराता है. रूद्रदामन के जुनागढ़ अभिलेख में यौधेयो का उल्लेख हुआ है. जिन रूद्रदामन ने पराजित भी किया था. पंजाब के आधुनिक जोहिया राजपूत इन्ही प्राचीन यौधेयो के वंशधर है.

- मालव - ये लोग रावी तथा चेनाब नदियों के मध्यवर्ती भूमि मद्र देश में राज करते थे. पाणिनि कृत अष्टाध्यायी में मद्र देश का प्राचीनतम् उल्लेख प्राप्त होता है.

इसके अतिरिक्त अन्य गणराज्य थे; आभिर, अर्जुनायन, सनकानिक, काक, खरपरिक.

- पड़ोसी राज्य - जिन पड़ोसी या विदेशी राज्यों के साथ समुद्रगुप्त ने अपना सम्बन्ध स्थापित किया, वे थे;
  - देवपुत्र - षाहि - षाहानु षाहि
  - शक
  - मुरुण्ड
  - सिंहल द्वीप तथा,
  - सर्वद्वीप वासी.

इनमें प्रथम का सम्बन्ध कुषाण स्थापित की गयी है. सिंहल द्वीप से तात्पर्य 'लंका' से . चीनी लेखों द्वारा समुद्रगुप्त और लंका के तत्कालीन शासक मेघवर्ण के पारस्परिक सम्बंधों पर अच्छा प्रकाश पड़त .

- समुद्रगुप्त और अश्वमेध यज्ञ

दिग्विजय (धरणीबंध) की योजना सफल क्रियान्वयन के पश्चात् समुद्रगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान किया. इसके पूर्व पुष्यमित्र शुंग ने भी दो अश्वमेध यज्ञ किये थे. जिसका वर्णन धनदेव के ~~अयो~~ अयोध्या अभिलेख में मिलता है.